Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.III/April; 12pp.1-4 ISSN:-2230-7850

Research Papers

पांगी घाटी में वन प्रबन्धन, संरक्षण और विकास के कार्य

सन्नी शर्मा
सहायक प्रध्यापक भुगोल
राजकीय महाविधालय
पांगी जिला चम्बा हि0 प्र0

प्रस्तावना :–

पांगी घाटी हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिला में स्थित एक दूरदराजीय जनजातीय उपमण्डीय क्षेत्र है। यह क्षेत्र पीरपंजाल और जास्कर धार के मध्य में स्थित है जो कि वर्ष भर में पांच से छः महीने वर्फ से ढका रहता है और शेष दुनिया से कटा रहता है। यह इतना दुर्गम क्षेत्र है कि कहा जाता है कि यहां पर कार्य करने वाले कर्मचारियों को पहले मृत्यु भता (Funeral Allowance) भी दिया जाता था पांगी घाटी 32′ 48′ से 33′ 13′ उतर अंक्षाश तथा 76′ 15′ से 76′ 47′ पूर्वी रेखांश के मध्य स्थित है। इसकी समुन्द्र तल से उंचाई 2013 मीटर डैरु से 6443 मीटर डैरु है। पांगी घाटी का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1503 वर्ग कि0 मी0 है, जिसमें से 1217 वर्ग कि0 मी0 वन क्षेत्र है। यानि कि कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 81ः वन क्षेत्र है। वर्ष 1952 में बनाई गई हमारी राष्ट्रीय वन नीति जिसे वर्ष 1988 में संशोधित किया गया था के अनुसार देश के कुल भूभाग का 33ः भाग समतल व 66ः भाग पहाड़ी क्षेत्र में वनों के अधीन होना चाहिए। घाटी में वन आवरण लगभग 38ः है। वन क्षेत्र का श्रेणी वार वर्गीकरर्ण निम्न प्रकार से है।

SN	Type of forest	Area (in Hectare)	Percentage
1	Reserve Forest	8,003	6.50%
2	DPfs (old)	46,400	38%
3	DPfs (new)	549	0.50%
4	UPfs	66,726	55%
Total		1,21,678	100%

पांगी वन मण्डल में मुख्यता निम्नलिखित थ्वतमेज जलचम हैं।

Group 13:	Himalayan Dry Temperate Forests	(13/C2a, 2b,2D51,3&4)
Group 14:	Sub-Alpine Forests	(14/C1a, 1b)
Group 15:	Moist Alpine Forests	(15/C13)
Group 16:	Dry Alpine Scrub	(16/C1)

पांगी वन मण्डल में वर्तमान में 20 पौधशालाएं हैं जिसमें मुख्यताः स्परूस, पीसिया स्मिथयानाद्ध, फर, एवीज पीन्ड्रोद्वार एलन्यस चुली, प्रूनस आर्मेनियकाद्व, चिलगोजा, सीडरस देवदार, होरस चेस्टनर, जामुन, पाइनस, वालीचाइना, पॉपलुर, रोविन्या, जुगलानस रिजिया विलो, धूप, पिकरोराइजा करूआ, सिगंली मिगंली, वन ककड़ी, एनजेलिका ग्लोका करू, एकोनिटम हिटीरोफाइलम, रतनजोत, सालमपंजा, सीबकथोर्न, इत्यादि प्रजाति के पौधे लगाए जाते हैं। इस साल विभिन्न नर्सरियों में 4,92,800 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है और सुराल भटौरी में एक हरबल पौधषाला का निर्माण किया जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों व स्कीमों के अर्न्तगत 140.77 हेक्टेश्र क्षेत्र में पौधारोपण किया जाएगा। पौधारोपण में 89,084 औषधीय प्रजाति व 96,645 अन्य प्रजाति के पौधे रोपित किए जाएंगे। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत पांगी वन मण्डल में तीन वन सरोवर कुठल धार, सुराल धार व थिमि धार में बनाए जाएंगे। इनका मुख्य उदेश्य वर्षा के जल का सरंक्षण है। 1988 में हि0 प्र0 सरकार द्वारा एक योजना जिसे सांझी वन योजना के नाम से जाना जाता है पांगी में 2001–2002 में श्शुरू की गई। पांगी वन मण्डल ने वर्ष 2003 में घाटी के छः पिछड़ी पंचायतो में सर्वेक्षण द्वारा 19 बार्डों को केन्द्र द्वारा प्रायोजित वन विकास अभिकरण योजना के लिए चयनित किया गया।

Please cite this Article as : सन्नी शर्मा , पांगी घाटी में वन प्रबन्धन, संरक्षण और विकास के कार्य : Indian Streams Research Journal (April ; 2012)

पांगी में जहो वन सरंक्षण एवं विकास को बढावा देने के लिए अनेक कदम उठाए जा रहे हैं वहीं स्थानीय लोगो व उनकी सेवा में कार्यरत विभिन्न विभागों के लिए बालन लकड़ी (जलाने के लिए) की व्यवस्था भी की जा रही है वर्ष 2010 में हि0 प्र0 वन विकास निगम कुल्लु से 3507 क्विंटल बालन की मांग की गई थी। पांगी घाटी में दुर्लभ वन्य प्राणियों का प्राकृतिक आवास भी है। जैसे कस्तूरी मृग, काला व लाल भालू, बर्फानी तेंदुआ, टंगरोल, हिमालयन थार, घोराल, मोनाल, चकोर, जंगली मुर्गा, जुजुराणा, चमगादड़ आदि।

वर्ष 2003 में हि0 प्र0 सरकार ने ग्राम पंचायतों को उनसे सम्बन्धित क्षेत्रों से निकाले गए 37 प्रकार के औषधीय पौधों का निर्यात परमिट जारी करने के लिए प्राधिकृत किया है। निर्यात परमिट से मिलने वाली फीस उस ग्रांम पंचायत का राजस्व होगा।

पांगी घाटी के हुडान भटौरी नर्सरी में 93,298 पौधे विभिन्न औशधीय एवं सुंगन्धित प्रजाति के हैं जिसका विवरण इस प्रकार है।

SN	Name of Plant	Local Name	No. of Plants
1	Aconitum Heterophyllum	Atish	5250
2	Augelica Glauca	Chaura	3915
3	Saussurea lappa	Kuth	11,300
4	Dactylorrhiza hatagirea	Salam Panja	1474
5	Podophyllum Hexandrum	Bankakri	2994
6	Selinum Vaginatum	Bhoot Kesi	430
7	Gentiana Kurroo	Koru	20,299
8	Jurinea Macrocephalla	Dhoop	9,355
9	Aconitum Viollaceum	Mithi Patish	4,800
10	Arnebia Euchroma	Rattan Jot	1,239
11	Rheum Emodi	Chukri	2,000
12	Farna		4,000
13	Urginea Indica	Shawan	1,600
14	Aconitum Chasmanthum	Patish	24,642
	Total		93,298

पांगी घाटी में वन प्रंबन्धन व विकास में आने वाली कुछ समस्याएं भी है जो महत्वपूर्ण है। इससे पांच से छः महीने तक पड़ने वाली वर्फ के कारण नए पौधों के विकास में आने वाली समस्या व पशुओं को खुले में चरने के लिए छोड़ देना जो कि नए रोपित पौधों को भोजन बना डालतें है। इसके अलावा कुछ स्थानीय लोगो द्वारा चारे व इमारती लकड़ी के लिए वनों का दोहन करना। इसके अलावा थ्वतमेज ळनंतक की संख्या में कमी जो की वनो की अच्छी तरह सुरक्षा कर सकते हैं

पांगी घाटी में अनेक प्रयास राज्य सरकार की तरफ से किए जा रहे हैं। जिससे जहां पर वनों का विकास तथा सरंक्षण हो लेकिन स्थानीय लोगो की सहभागिता तथा जागरूकता भी इसके लिए आवश्यक है ताकि यह धरोहर भविष्यमें भी समृद्ध रहे। संस्कृत में एक श्लोक के अनुसार :–

दषकूपः समावापी, दषवापी संमोह्रदः।
दषः ह्रद समः पुत्रो, दष पुत्रो सम द्रुमः।।

अर्थात दस कुओं के बराबर एक बाबड़ी है, दस बाबड़ीयों के बराबर एक सरोबर है। दस सरोबर एक पुत्र तुल्य है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है।

Please cite this Article as : *सन्नी शर्मा*, *पांगी घाटी में वन प्रबन्धन, संरक्षण और विकास के कार्य* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**